अर्थात्, व्यक्ति कहने लगता है मैंने यह कोशिश की, लेकिन परिणाम वह नहीं है जो मैं चाहता था। अब मैं क्या करूँ? यह प्रक्रिया–निम्नलिखित दृष्टिकोण से बहुत अलग है जिसकी अपेक्षा उन्नत शुरुआती चरण में किसी से की जा सकती है।यह चरण तब शुरू होता है जब आप एक पेशेवर शिक्षक के रूप में पूर्णकालिक रोजगार स्वीकार करते हैं। एक व्यक्ति को एक सक्षम पेशेवर शिक्षक बनने में आम तौर पर 2–5 साल का एक नौकरी का प्रशिक्षण (और, मेरी राय में, एक मास्टर डिग्री) लगता है। कई शिक्षक इस स्तर को कभी हासिल नहीं करते क्योंकि उन्हें पर्याप्त अनुभव नहीं मिलता है। नीचे दिया गया आंकड़ा दर्शाता है कि 50% महिलाएं और 70% पुरुष पांच साल का अनुभव हासिल करने से पहले इस पेशे को छोड़ देते हैं।

* अनुभव और औपचारिक ज्ञान दोनों पर ध्यान देता है ।
* नियमों को कड़ाई से पालन करता है ।
* प्रतिक्रिया के परिणाम को नोटिस करता है ।
* सकारात्मक प्रक्रिया की कम से कम उम्मीद करता है ।
* ऑब्जेक्टीव आधारित कार्य ।

Expert level (प्रवीण स्तर)

प्रवीणता के चरण में एक व्यक्ति कार्य के महत्वपूर्ण तत्वों को बहुत जल्दी, बहुत आसानी से पहचान सकता है। उनके पास एक तरल शैली है जो उन्हें सहज ज्ञान युक्त समझ के आधार पर निर्णयों को लागू करने की अनुमति देती है – समझ जो उनके अनुभवों से निकलती है। ये समझ इतनी आंतरिक हैं कि कभी–कभी वे यह भी नहीं बता सकते कि ऐसा क्यों है कि वे ऐसा सोच रहे हैं। यह वह चरण है जब किसी व्यक्ति की शैली व्यक्त होने लगती है और व्यक्ति का अनुभव (स्कूल प्रशिक्षण के बजाय) प्रदर्शन में एक प्रमुख कारक होने लगता है। इस स्तर पर अधिकांश लोगों ने एक संरक्षक प्राप्त कर लिया है जो उन्हें शोध के माध्यम से उपलब्ध सामान्य शिक्षा से परे मार्गदर्शन कर सकता है।

Master level (विशेषज्ञ स्तर)

विशेषज्ञता के स्तर पर – और ये वास्तव में क्षेत्र के सितारे हैं – व्यक्ति एक अनुभवी–आधारित में काम कर रहा है जो कि कुशल स्तर पर हासिल किया गया है, लेकिन अधिक समग्र तरीके से। इसका मतलब है कि वे केवल एक या दो तत्वों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं, बल्कि विभिन्न प्रकार के पैटर्न को समझने और काम करने में सक्षम हैं। एक क्षेत्र में अधिकांश व्यक्तियों के लिए, जो सक्षमता के चरण में काम कर रहे हैं, यदि वे एक समय में एक या दो से अधिक चर पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करते हैं, तो वे संज्ञानात्मक अधिभार प्राप्त करते हैं और इसे संभाल नहीं सकते हैं। जो लोग विशेषज्ञता के स्तर पर काम कर रहे हैं वे बड़ी मात्रा में जानकारी को संभाल सकते हैं और बहुत तरल, प्राकृतिक प्रदर्शन दे सकते हैं। प्रवीणता और विशेषज्ञता के चरणों में व्यक्तियों के बीच प्रमुख अंतर यह है कि बाद के चरण में व्यक्ति जो करते हैं वह लगभग हमेशा काम करता है। प्रवीणता की अवस्था में व्यक्ति अभी भी गलतियाँ करते हैं;

हम बहुत भाग्यशाली महसूस करते हैं जब हमें इनमें से किसी एक शिक्षक को नियुक्त करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। हम अपने पूरे शिक्षा अनुभव में केवल कुछ मुट्ठी भर लोगों के साथ बातचीत कर सकते हैं। इन शिक्षकों को व्यापक रूप से श्रेष्ठ माना जाता है। वे उन शिक्षकों के लिए भी संरक्षक होने की संभावना रखते हैं जो उनके जैसा बनना चाहते हैं।यह चरण तब शुरू होता है जब आप एक पेशेवर शिक्षक के रूप में पूर्णकालिक रोजगार स्वीकार करते हैं।

Clark L. Hull

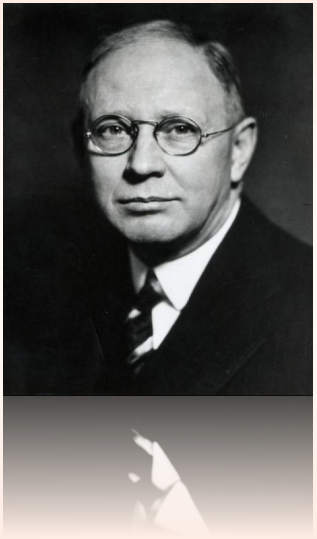

हल का पुनर्बलन का सिद्धांत

सिद्धांत	–	प्रबलन का सिद्धांत
गतिपादक	–	क्लार्क लिमोनाई हल (C.L. हल)
निवासी	–	अमेरिका
पुस्तक	–	PRICIPLES OF BEHAVIOUR (व्यवहार के सिद्धांत)
सिद्धांत का प्रतिपादन	–	सन् 1915 ई में किया (सन् 1930 और 1951 ई में संशोधित)
प्रयोग	–	बिल्ली, चूहा
सिद्धांत का आधार वाक्य	–	सीखना आवश्यकता की पूर्ति के द्वारा होता है ।

सिद्धांत के अन्य नाम

1. गणितीय सिद्धांत (Mathematical Theory)
2. परिकल्पित निगमन सिद्धांत (Hypothetical Deductive Theory)
3. आवश्यक अवकलन सिद्धांत (Need Reduction Theory)
4. जैविकीय आवश्यकता का सिद्धांत
5. सवलीकरण का सिद्धांत
6. चालक न्यूनता का सिद्धांत
7. यथार्थ अधिगम का सिद्धांत
8. प्रबलन/प्रोत्साहन का सिद्धांत
9. आवश्यकता निष्कर्ष का सिद्धांत
10. S - O -R Learning Theory

अमेरिकी विद्वान सी.एल. हल ने थार्नडाइक के प्रयोग एवं सिद्धांत को पढ़ा और उसमें कुछ कमियाँ महसूस करते हुए इन्होनें 1915 ई. में अपना प्रयोग करते हुए, अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''प्रिसिंपल ऑफ बिहेवियर्स'' में अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया । इन्होने अपने सिद्धांत को 1930 और 1951 में एक बार फिर से संशोधित किया ।

हल ने चूहे पर भी प्रयोग किया परन्तु सिद्धांत देते इन्होने थार्नडाइक के समान परिस्थितियों में बिल्ली पर प्रयोग किया और अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया । इन्होने प्रयोग करते समय प्रयोग की परिस्थितियों को बदला –

1. पहली बार बिल्ली को भूखी अवस्था में पजल बॉक्स में बैठाया और बाहर की तरफ मछली का टुकड़ा उइदीपक के रुप में रखा, तब बिल्ली ने प्रयास करते हुए दरवाजा खोजना सीखा ।

2. दूसरी परिस्थिति में बिल्ली को पहले भरपेटर भोजन दिया और फिर बाहर मछली का टुकड़ा रखते हुए पजल बॉक्स में बंद किया । इस बार बिल्ली ने बाहर आने का अधिक प्रयास नहीं किया ।

3. बिल्ली को पजल बॉक्स में भूखी अवस्था में बैठाया और बाहर की तरफ आभासी भोजन रखा, तब बिल्ली ने शुरुआत में बाहन आने का प्रयास किया परन्तु बार–बार आभासी भोजन देने से बिल्ली ने बाहर आना बन्द कर दिया।

इन अलग–अलग परिस्थितियों में प्रयोग करने के बाद सी.एल. हल ने सिद्ध किया कि जब बिल्ली को भूख की अवस्था में आवश्यकता थी तब वह बाहर आने का प्रयास कर रही थी और बाहर रखा भोजन उसके लिए पुनर्बलन था परन्तु जब बिल्ली को आवश्यकता नहीं थी तब बिल्ली ने बाहर आने का प्रयास नहीं किया और जब बाहर आने पर पुनर्बलन नहीं मिला तब भी बिल्ली ने बाहर आना बंद कर दिया अर्थात् कोई भी प्राणी उसी कार्य को बार–बार करता है, जिस कार्य को करने से उसकी आवश्यकता पूरी होती है और आवश्यकता पूर्ति उस प्राणी के लिए पुनर्बलन होता है।

लेस्टर एण्ड डरसन :– '' यह सिद्धांत भी थार्नडाइक के समान प्रकृति का है, परन्तु हल ने इसे नपे–तुले शब्दों में प्रस्तुत किया है। ''

स्किनर :– अधिगम के साहचर्य से संबंधित सिद्धांतों में हल का सिद्धांत सर्वश्रेष्ठ है।

हल ने एक सूत्र का प्रतिपादन किया –

$$B = D \times H$$

B = व्यवहार
D = चालक
H = आदत

S - O - R सूत्र का स्वीकार किया है।

हल के सीखने के सिद्धांत का अर्थ स्पष्ट करते हुए 'स्टोन्स' ने लिखा है – सीखने का आधार, आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया है यदि कोई कार्य पशु या मानव की किसी आवश्यकता को पूरा करता हे तो वह उसको सीख लेता है।

सिद्धांत की उपयोगिता :–

1. इस सिद्धांत के आधार पर ही विभिन्न कक्षाओं के पाठ्क्रम की विषय–वस्तु का निर्माण किया जाता है।
2. यह सिद्धांत प्रोत्साहन पर बल देता है।